नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

रेपो रेट कम करके आरबीआई ने राहत दी

भारतीय रिजर्व बैंक ने अपनी त्रैमासिक मौद्रिक नीति की समीक्षा करने के बाद रेपो रेट में कमी की है. आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति ने रेपो रेट में तत्काल प्रभाव से 0.25 फीसदी की कटौती का फैसला सर्वसम्मति से लिया है. दरअसल आरबीआई ने लगातार दूसरी बार प्रमुख ब्याज दर में 25 आधार अंकों की कटौती का एलान किया है. केंद्रीय बैंक के इस फैसले से अमेरिका की ओर से लगाए गए पारस्परिक शुल्कों से प्रभावित अर्थव्यवस्था को सहारा मिलने की उम्मीद बढ़ी है. ब्याज दरों में कटौती के बाद प्रमुख नीतिगत दर यानी रेपो रेट घटकर 6 प्रतिशत हो गई. इस कदम से आवास, ऑटो और कॉर्पोरेट ऋण लेने वालों को राहत मिली. यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है. इसका कारण यह है कि पिछले सप्ताह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत सहित 60 देशों पर पारस्परिक टैरिफ लगाने की घोषणा की थी, यह घोषणा 9 अप्रैल से प्रभावी है.

अमेरिका ने भारत के झींगा, कालीन, चिकित्सा उपकरणों और सोने के आभूषणों सहित विभिन्न उत्पादों पर 26 प्रतिशत पारस्परिक टैरिफ लगाया है. यह 26 प्रतिशत शुल्क अमेरिका में भारतीय वस्तुओं पर लगने वाले मौजूदा शुल्क के अतिरिक्त है. अमेरिका के इस कदम से खास तौर पर निर्यात के मामले में भारतीय उत्पादकों के समक्ष बहुत बड़ी चुनौती उत्पन्न हो गई है. इस वजह से बाजार में भय व्याप्त है. रिजर्व बैंक ने रेपो रेट में कमी करके बाजार को राहत देने की कोशिश की है. यह ध्यान रखना होगा कि जब भी रेपो रेट कम होता है तो कर्ज सस्ते होते हैं. जब कर्ज सस्ते होते हैं तो बाजार में तरलता बढ़ती है. तरलता बढ़ती है तो मुद्रा का प्रवाह गतिमान रहता है जिसका लाभ अर्थव्यवस्था को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मिलता है. इसी के साथ वैश्विक अनिश्चितताओं को देखते हुए आरबीआई ने चालू वित्त वर्ष के लिए विकास अनुमान को भी 6.7 प्रतिशत से घटाकर 6.5 कर दिया है. यह अनुमान घटा जरूर है, लेकिन इतना कम नहीं हुआ है,कि बहुत चिंता की जाए.

बहरहाल, उम्मीद है कि आरबीआई के इस कदम से बाजार को स्थिरता मिलेगी और निर्यातकों को इस नई आर्थिक चुनौती से निपटने की शक्ति मिलेगी. रेपो दरों में कटौती होने से यदि कर्ज की दरों में कमी आती है तो इससे भारतीय बाजार में वस्तुओं की मांग बढ़ेगी. यही कारण है कि इसे एक समयोचित निर्णय माना जा रहा है. आर्थिक मामलों के जानकारों का कहना है कि पिछले कुछ समय से खुदरा बाजार में महंगाई पर नियंत्रण लगा है. सब्जियां, फलों और अनाज की कीमतों में लगाम लगी है. इससे खुदरा महंगाई दर कंट्रोल में आई है. तभी से अनुमान लगाया जा रहा था कि आरबीआई रेपो दरों में कटौती कर सकता है. और उम्मीद के अनुसार आरबीआई ने पहले फरवरी में और अब अप्रैल में लगातार दो बार रेपो दरों में कटौती की है. निश्चित रूप से ब्याज दरों में कमी से बाजार में खपत बढ़ाने में मदद मिलेगी. ईएमआई के कम होने से ग्राहकों को महंगाई की मार से बचाने और बचत को दूसरी वस्तुओं की खपत में लगाने में मदद मिलेगी. जाहिर है वैश्विक अनिश्चितता के इस दौर में घरेलू मांग बढ़ाने के लिए यह कदम लाभकारी साबित हो सकता है. कुल मिलाकर भारतीय रिजर्व बैंक के रेपो रेट घटाने के फैसले से यह जाहिर होता है कि देश का सर्वोच्च ०नीति निर्धारक बैंक और केंद्र सरकार अमेरिका द्वारा उत्पन्न की गई नई चुनौतियों से निपटने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रहे हैं.

जयंती पर विशेष

महावीर स्वामी : एक विहंगम दृष्टि

कैलाश मड़बैया
पद्म श्री से अलंकृत वरिष्ठ साहित्यकार

महावीर का नाम सुनते ही यकायक आपके मन में जो भाव कोंधेगा वह –महा वीर , यानी वीरता में महान हो. अगर आप हिन्दु हैं तो कहेंगे हनुमान जी का नाम महावीर है. अगर किसी जैन मतावलम्बी से पूँछो तो कहेगा – अन्तिम तीर्थंकर थे महावीर स्वामी. मतलब है तो यह एक विषेषण ही जो अतिवीरता को प्रदर्षित करता है. अलग बातें इसलिये कि बाह्य शारीरिक बल के कारण हनुमान जी को महावीर कहने लगे और आन्तरिक वीरता अर्थात् इन्द्रिय विजयी होने के कारण, 24वें तीर्थंकर वर्धमान को महावीर स्वामी के नाम से जानते है.

हालाँकि गहरे अर्थों में जायेंगे तो हनुमान जी भी अन्त: विजयी थे, पवनपुत्र आदि अनेक नाम इनके भी हैं पर राम–सीता की परम्परा के पोषक थे.दूसरी ओर वर्धमान तीर्थंकर भी कुछ बाहरी शक्ति प्रदर्षन कारने वाली घटनाओं के कारण ही महावीर कहलाने लगे थे. वीर,अतिवीर,सन्मति आदि भी इन्हें ही कहते हैं.यह तीर्थंकरों की परम्परा के पोषक थे. तात्पर्य यह कि शाब्दिक अर्थ कहीं नहीं बदले. हालाँकि यह सही है कि अधिकाँष प्रचलन में जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर का नाम ही भगवान महावीर स्वामी के रुप में प्रसिद्ध है. इतना प्रचलन में है कि कहीं कहीं तो जैनधर्म का प्रवर्तक तक महावीर स्वामी को अज्ञानतावष कह दिया जाता है. अज्ञानता मैं इसलिये कह रहा हूँ कि यह इतिहास सम्मत प्रमाणित तथ्य है कि जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर ऋषभ नाथ रहे, फिर अजित, संभव आदि सहित ...... नेमिनाथ, पार्ष्वनाथ, के क्रम में 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी हुये हैं. गूगल पर खोजोगे तो तीर्थंकर महावीर स्वामी ही आयेगा. सांसारिक परम्पराओं में परिवार का सबसे छोटा बेटा बहुत लाड़ला होता है, इसलिये तीर्थंकर कुल में महावीर स्वामी सभी की जुवान पर ज्यादा ही चढ़े हैं.

तो आइये जैन मान्यता के अनुसार वर्तमान शासन नायक तीर्थकंर महावीर स्वामी के बारे में हम उनके सिद्धातों के आधार पर विचार करें. क्योंकि भगवान कहने से कोई महान नहीं हो जाता वरन् कृतित्व और उसके विचार कितने हमारे काम के हैं यह महत्वपूर्ण होता है. दूसरे अर्थों में प्रासंगिकता विचाणीय होती है. इन अर्थों में 2600 वर्षों के बाद भी तीर्थंकर महावीर स्वामी दरअसल आज भी प्रासंगिक हैं. बताते हैं कैसे ?आज की प्रतिनिधि समस्यायें हैं–यूक्रेन और रुस का अन्तर्राष्ट्रीय युद्ध,पाक–बलूच,कष्मीर, चीन आदि की वैदेषिक समस्यायें. सामाजिकतौर पर देखें तो गरीबी अमीरी, धार्मिक उन्माद, जातीय चिद्वेष,नफरत बेरोजगारी आदि आदि. उपरोक्त समस्याओं का निदान कैसे महावीर के सिद्धान्तों से किया जा सकता हैं. देखें,...तो पायेंगे कि महावीर स्वामी की सैद्धान्तिक 'अ 'त्रयी में ही प्रथमत: इनका निदान निहित है. कैसे ?

महावीर की सैद्धान्तिक 'अ' त्रयीहै– 1–अहिंसा, 2अपरिग्रह और 3 अनेकान्तवाद. हम बहुत मोटे अर्थो में विचार करें तो अहिंसा अनेकानेक मर्जों की दवा है. कारण कि हिंसा से आज तक कोई समस्या नही सुलझी है. 'संघर्षों की रण भेरी बेकार है, तलवारों से तेज प्यार की धार है.' मिल बैठ कर विचार करें तो कोई ऐसी समस्या नहीं जिसका कोई हल न निकले और प्रेम/ सद्भाव में ही वह ताकत है. हिंसा से भले अस्थाई हल निकलता दिखे पर स्थाई हल प्रेम से ही संभव है. भारत पाक या चीन से कितने युद्ध हुये पर समस्यस्या जस की तस बनी है. महात्मा गाँधी ने तो भारत को आजादी ही अहिंसक साधनों से दिलाई. 'दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढ़ाल..'यों ही नहीं कहा जाता. दूसरे सिद्धान्त 'अपरिग्रह' का सीधा सीधा सा अर्थ है अपनी आवष्यक जरुरतों को छोड़ कर अन्यथा उपभोग – सामग्री का संग्रह नहीं करें. अगर हम अपनी जरुरतें कम करते जायें और दूसरों की जरुरतें समझे तो अपनी अनावष्यक सभी को,त्याग देना चाहिये.यह दूसरे जरुरतमन्दों के काम आ जायेगी. तब सामाजिक विषमता अपने आप दूर हो जायेगी.

तीसरा सिद्धान्त है–'अनेकान्तवाद'. जिसका सामान्य अर्थ है कि हम ही सही नहीं हैं दूसरा भी सही हो सकता है. जो जितना देख रहा उतना ही सही है, पर पूर्ण नहीं. समस्त देखे अनदेखे पक्षों को मिलाकर ही पूर्णता आती है. अत: 'ही' के हठ का त्याग कर, 'भी' को महत्व दे तो झगड़ा ही न रहे. एकान्तिक द्रष्टि की हठ ही विवाद का कारण बनती है.दूसरों के विचारों को सुने और सम्मान करना सीखें. जो तुमें पसंद नहीं वह दूसरों के साथ कभी नही करें. तो अपने आप विवाद समाप्त. दरअसल अनेकान्त वाद ,महावीर स्वामी की मौलिक देन है. ऐसे समझें कि जैसे एक व्यक्ति, पुत्र के लिये पिता, बहिन के लिये भाई,पत्नी के लिये पति आदि होता है जबकि व्यक्ति एक ही है.

ग्वालियर चंबल डायरी

मूल और महल खेमों के बीच संवाद सेतु बनेंगी यशोधरा?

हरीश दुबे

ग्वालियर सीट से दो दफा सांसद और सूबाई सरकार की कैबिनेट में कई दफा मंत्री रहते हुए उद्योग, वाणिज्य, खेल, तकनीकी शिक्षा जैसे वजनदार महकमे संभाल चुकीं यशोधरा राजे ने 2023 के विधानसभा चुनाव में स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए खुद को चुनावी राजनीति से दूर कर लिया था. सिंधिया परिवार से घोर असहमति रखने वाले तमाम लोगों ने उस वक्त यह माना था कि तत्कालीन ग्वालियर रियासत की पूर्व राजकुमारी के सक्रिय राजनीति के सफर पर फिलहाल विराम लग गया है. लेकिन बेबाक तेवरों के लिए पहचानी जाने वालीं यशोधरा चुप होकर बैठने वाली नेत्रियों में से नहीं हैं. हां, यह सच है कि यशोधरा की पिछले डेढ़ साल में सत्ता व संगठन में भूमिका या सक्रियता न के बराबर रही लेकिन राजे अब पुरानी फॉर्म में लौट रही हैं.

यशोधरा ने राजमाता विजयाराजे की बतौर राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में भाजपा की राजनीति में प्रवेश किया था, तब ज्योतिरादित्य कांग्रेस में होते थे लेकिन अब बुआ और भतीजे एक ही पार्टी में हैं, इन हालात में यशोधरा को अब पार्टी में पुरानी हैसियत वापस हासिल कर मजबूत पहचान बनाने के लिए कुछ ज्यादा ही परिश्रम करना पड़ सकता है. राजे ने अपनी लंबी चुप्पी तोड़ दी है और इस वक्त राजनीतिक हलकों में उनकी सोशल मीडिया पोस्ट्स की चर्चा और जनसमस्याओं को लेकर उठाई जा रही आवाज की खनक गूंज रही है. यशोधरा पिछले कुछ दिनों से अंचल की समस्याओं को उठा रही हैं. स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली से लेकर ग्वालियर के नीडम आरओबी जैसे विकास प्रोजेक्टों के लोकार्पण में लेतलाली जैसे मुद्दों पर उनकी विष्फोटक पोस्ट चर्चा में हैं. सवाल पूछे जा रहे हैं कि क्या यह सक्रियता उनकी वापसी का संकेत है अथवा भाजपा नेतृत्व को दी गई एक संतुलित चेतावनी है? ग्वालियर में भाजपा मूल और महल खेमों में बटी है, लिहाजा पार्टी में आए दिन खींचतान की स्थिति रहती है. इस सूरत में यशोधरा संवाद सेतु की भूमिका निभा सकती हैं क्योंकि वे मूल भाजपा और महल भाजपा दोनों खेमों पर असर रखती हैं.

भाजपा की मुख्यधारा में लौट रहे हैं राज चड्ढा

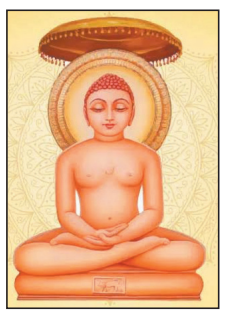

कभी अपनी ही पार्टी की सत्ता एवं संगठन के खिलाफ मुखर रहने वाले राज चड्ढा के सुर एकदम से बदल गए हैं. भाजपा में बुद्धिजीवी नेता की सोच रखने वाले राज चड्ढा इन दिनों अपने तेवरों के सर्वथा विपरीत और पार्टी नेताओं के प्रति सकारात्मक नजर आ रहे हैं. नीड़म आरओबी के उदघाटन के बाद पोस्ट कर उन्होंने जिस अंदाज में सीएम का शुक्रिया अदा किया और राजनीति में पुत्रवत कनिष्ठ हैसियत रखने वाले जिलाध्यक्ष की भी तारीफ की, उससे प्रतीत होता है कि भाजपा में अब परिस्थितियां चड्ढा के अनुकूल हैं एवं वे पार्टी में एक और पारी खेलने के लिए तैयार हैं. चड्ढा 60 साल पुराने कार्यकर्ता होने के साथ मीसाबंदी भी हैं. वे 1962 से जनसंघ और भाजपा से जुड़े हैं. वे पार्टी की ग्वालियर इकाई के जिलाध्यक्ष भी रह चुके हैं. इसके अलावा भाजपा के टिकट पर उन्होंने ग्वालियर पूर्व से विधानसभा चुनाव भी लड़ा था जो कि वे हार गए थे. इसके बाद पार्टी ने उन्हें ग्वालियर मेला प्राधिकरण का अध्यक्ष भी बनाया था. करीब डेढ़ दशक से वे उपेक्षा का शिकार होकर पार्टी में किसी पद पर नहीं हैं और समय–समय पर भाजपा, कांग्रेस व अन्य राजनीतिक दलों के अलावा प्रशासनिक अफसरों के संबंध में फेसबुक पर पोस्ट करते रहे हैं.

प्रधानमंत्री को बुके भेंट करते फोटो खिंचाने की हसरत...

इस समय ग्वालियर का जिला प्रशासन से लेकर पुलिस महकमा तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 11 अप्रैल के प्रस्तावित दौरे की दिन रात तैयारियों में जुटा है. हालांकि प्रधानमंत्री का ग्वालियर में अल्प प्रवास है लेकिन प्रशासन अपने तईं इंतजामात में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहता. प्रधानमंत्री इस दिन ग्वालियर के महाराजपुरा हवाईअड्डे आएंगे और यहां से अशोकनगर की ईसागढ़ तहसील स्थित आनंदपुर ट्रस्ट में मनाए जा रहे वैशाखी उत्सव में सम्मिलित होने रवाना होंगे. तैयारियों पर भोपाल की भी नजर है. खुद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ग्वालियर आने के बाद ईसागढ़ गए और तैयारियां देखीं. चीफ सेक्रेट्री अनुराग जैन भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए ग्वालियर मुख्यालय पर आला अधिकारियों से विस्तार से चर्चा कर चुके हैं.कलेक्टर रुचिका चौहान ने भी अफसरों की बैठक लेकर प्रधानमंत्री की यात्रा के मद्देनजर सुरक्षा के साथ ही अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में निर्देश दिए हैं. उधर भाजपा के स्थानीय नेता भी कुछ ज्यादा ही सक्रिय हैं. महाराजपुरा एयरपोर्ट पर मोदी से मुलाकात और उन्हें गुलदस्ता देते हुए फोटो खिंचाने की हसरत पूरी करने ये नेता अवसर और माध्यम तलाश रहे हैं.

भारत और चीन के स्टार्टअप में काफी फर्क

केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने तीखे स्वर में भारत और चीन के स्टार्टअप के बीच तुलना की है. उन्होंने तुरंत पैसे कमाने और आइसक्रीम या किराना बेचने वाले स्टार्टअप की बजाय चीन के समान एआई, रोबोटिक्स और डीप टेक जैसे उच्च तकनीक वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने को कहा. गोयल का परामर्श उचित और देशहित में है, परंतु इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि चीन जहां अपनी जीडीपी का 2.41 प्रतिशत अनुसंधान और विकास पर खर्च करता है, वहीं भारत में इस पर जीडीपी का सिर्फ 0.64 प्रतिशत खर्च किया जाता है. अमेरिका 3.47 प्रतिशत खर्च करता है. भारत का निजी क्षेत्र अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) पर 36.4 प्रतिशत योगदान करता है, तो चीन में 77 प्रतिशत व अमेरिका में 75 प्रतिशत योगदान दिया जाता है. चीन ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) में 70 प्रतिशत पेटेंट हासिल किए हैं. चीन ने 2,76,300 औद्योगिक रोबोट तैनात किए हैं, जो अमेरिका की तुलना में 7.3 गुना अधिक है. चीन में तकनीकी विश्वविद्यालय, कुशल श्रम शक्ति है. उद्योगों को तुरंत मंजूरी मिलती है. भारत में अभी ऐसा माहौल नहीं बन पाया है कि हमारे नए उद्योजक सीधे शिखर पर पहुंच जाएं. यहां पूंजी की भी बड़ी भूमिका है. बड़े तकनीकी अनुसंधान में समय और धन लगता है. हमारे स्टार्टअप आमतौर पर कम जोखिम का काम शुरू करते हैं, जिसमें यदि नुकसान होने लगे, तो अपने पैर पीछे भी खींच सकते हैं. चीन की प्रगति सस्ते और कुशल मजदूरों की वजह से भी हैं. आज चीन के कार निर्माण में बीवायडी, सोशल मीडिया में टिकटॉक और आधुनिक फैशन में शीन जैसी कंपनियां अग्रणी हैं. चीन ने बहुत कम बजट में अपना एआई मॉडेल च्डीपसीकज विकसित किया. भारत में विकास की राह में भ्रष्टाचार और लालफीताशाही रोड़ा बने हुए हैं. इसके अलावा देश में एआई, रोबोटिक्स, ड्रोन व डीप टेक में प्राइवेट फंडिंग गिर रही है. ईवी में भी स्टार्टअप की फंडिंग पर लगाम लग रही है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

जूते दे दो, पैसे ले लो लेकिन शादी में मत पिटो

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, शादी में जूता चुरानेवाली रस्म कभी बड़ी महंगी पड़ जाती है. देहरादून से मुस्लिम परिवार की बारात बिजनौर पहुंची. बैंड–बाजा, नाच–गाना सब कुछ बढ़िया रहा, लेकिन जब साली ने दूल्हे राजा के जूते चुराए, तो उसके बाद बहुत हंगामा हो गया.

हमने कहा, यह तो आपसी हास–परिहास और मजे की रस्म है. इससे हंसी–दिल्लगी के साथ आपसी मेलजोल बढ़ता है. जीजा–साली की नोकझोंक और मस्ती चलती ही रहती है. कोई तो यह भी कहने से नहीं चूकता कि साली आधी घरवाली होती है! आपने राजश्री प्रोडक्शन की फिल्म हम आपके हैं कौन देखी होगी. उसमें तो जूता चुराई की रस्म पर गाना है– दूल्हे की सालियों, हरे दुपट्टेवालियों, पैसे ले लो जूते दे दो! यह मजेदार गाना माधुरी दीक्षित और सलमान खान पर फिल्माया गया है. इसके अलावा एक तख्त पर पापड़ डालकर चादर से ढक दिया जाता है. उस पर बैठने के लिए कहा जाता है. सलमान खान इस चालाकी को समझ जाता है. वह और माधुरी दीक्षित दोनों पहले आप–पहले आप कहते हैं. यह प्रसंग भी रोचक है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज यह फिल्म मनोरंजक थी, लेकिन बिजनौर वाली शादी की रस्म में लाठी–डंडे चल गए. हुआ यह कि जूता चुरानेवाली साली ने नेग में अपने होनेवाले जीजा से 50,000 रुपए मांगे. दूल्हे ने कहा चलो 5,000 में निपटा लेते हैं. बहस चली तो लड़कीवालों ने दूल्हे को भिखारी कह दिया. इस बात पर मारपीट शुरू हो गई. दूल्हे के पिता, दादा, भाई, बहनोई सभी को पीटा गया. गुंडों को बुलाकर बारात को बंधक बनाया गया. आखिर पुलिस ने दूल्हे और उसके परिवार को मुक्त कराया. समझाया गया कि जो भी हुआ उसे भूल जाओ.

हमने कहा, हिंदी प्रदेशों में जेवनार या बारातियों के भोजन के समय गाली गाने का भी रिवाज है. इसका कोई बुरा नहीं मानता. शादी हंसी–खुशी से करनी चाहिए. इसमें मारा–मारी क्यों होनी चाहिए? पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, जूता तो हर हाल में साली चुराएगी ही. इसलिए दूल्हे को अपने एक्स्ट्रा जूते किसी दोस्त के पास पहले से रखवा देने चाहिए. जूता चोरी जाए, तो दूसरे जूते पहन लेना चाहिए. साली जूता वापस दे या न दे, उसे पैसे जरूर देने चाहिए. साली को अंग्रेजी में सिस्टर इन लॉ या कानूनी बहन कहा जाता है. महाराष्ट्र में साली अपने जीजा को आदरपूर्वक भाऊजी कहती है. जब ऐसा है तो आपस में इकरार रहना चाहिए, तकरार की क्या जरूरत है! साली चाहती, तो अपने बहनोई को चिढ़ाते हुए कह सकती थी–जीजा रे जीजा, इमली का बीजा.

शब्द–सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11868

- डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	■	4		5
	■	6				■	
	■	7		■	8	9	
■	10		■	11	■		■
12			■	13			14
	■	■	15		■	16	
17	18	19	■	20	21	■	
22			■	23		■	

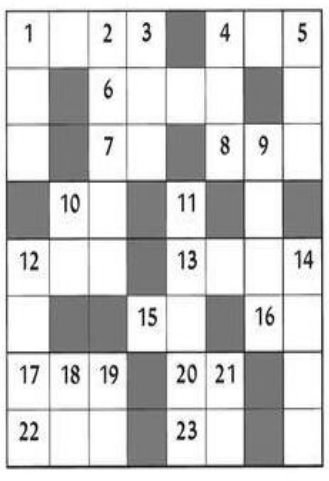

ऊपर से नीचे

1. मनाही, रोक (सं.) 2. चूहे की आकृति का एक उड़नेवाला जीव 3. नाचना या नृत्य करना 4. पागलपन, खब्त, झोंक 5. अंधेरा (उर्दू) 9. रावण 10. धंसना, आहत करना, ग्रहों की दशा (सं.) 11. पानी भरने वाली स्त्री 12. दो बिंदुओं अथवा कालों के मध्य का अवकाश 14. कीचड़, पंक 18. क्रीड़ा, खेल, हंसी मजाक 19. सौ, सैकड़ा (सं.) 21. दशा, अवस्था, कुशल मंगल, समाचार, वृत्तांत (उर्दू)

बायें से दायें

1. धार्मिक या नैतिक बातों की व्याख्या समझा कर कहना. 4. समानता, बराबरी 6. अचार आदि रखने का बड़ा पात्र 7. गाना, गीत, वर्णन 8. धब्बा, लांछन, बदनामी 10. हिन्दुओं के आदि धर्मग्रंथ 12. आंधी 13. हानि रहित 15. हविर्दान के समय उच्चारण किया जाने वाला शब्द, पूर्णत: विनष्ट 16. काले सफेद रंग का तिलहन 17. चंद्रमा 20. मुक्त 22. मनोहर, सुंदर, श्रृंगार रस का एक कायिक भाव 23. जलकल की टोटी, दमयंती का पति

Solution 11867

अ	नि	वा	र्य	■	अ	■	म
नु	■	ष्य	■	च	तु	र्भु	ज
भ	व्य	■	■	ह	ल	■	बू
व	■	से	म	ल	■	ब	र
■	च	ना	■	प	क	ड़	■
चा	र	■	प	ह	ल	वा	न
बु	खा	र	■	ल	■	न	म
क	■	ति	ल	■	पा	ल	न

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्रों से मतभेद रहेगा. यात्रा का योग है. व्यर्थ की चिन्ता से मन तनावग्रस्त रह सकता है. सामाजिक विवाद के कारण अत्याधिक क्रोध से हानि होगी. वर्ष के मध्य में पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.वर्ष के अन्त में अधिकारियों के सहयोग से लाभ होगा. पूर्व निर्धारित कार्यो में सफलता मिलेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मित्रों से मतभेद रहेगा. यात्राका योग है. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से मन मुटाव रह सकता है, हानि का योग है. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ की चिन्ता और परेशानी से मुक्ति मिलेगी. सामाजिक विवाद का सामना करना होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा मिलेगीं मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. पारिवारिक सुखबनारहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को अधिकारियों से लाभ होगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को यश और प्रतिष्ठा मिलेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख, मिलनसार होगा, स्वास्थ्य साधारण रहेगा, परिश्रमी एवं लगनशील होगा, कम आय में भी अच्छी व्यवस्था जमा लेगा, माता पिता भाई बहिनों के अलावा पूरे परिवार का ध्यान रखेगा, मिलनसार होगा.

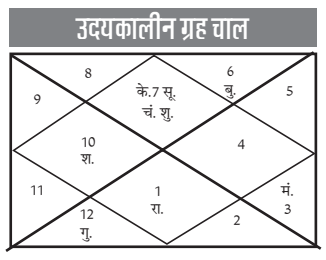

मेष– भावनाओं पर काबू रखें, लोग मजाक उड़ायेंगे, पारिवारिक मामलों में सबकी सलाह लाभदायी रहेगी, लंबित कार्य मे सफलता मिलेगी.

वृषभ– सकारात्मक सोच से मामले सुलझेंगे, मित्रों का सहयोग रहेगा, भावुकता पर नियंत्रण रखें, नवीन योजनाओं का विस्तार हो सकता है.

मिथुन– निजी कार्यो को टालने से समस्या बढ़ सकती है, निजी सम्बन्धों में चल रहा टकराव दर होगा, कुछ जरूरी काम बनेंगे, लाभ प्राप्त होगा.

कर्क– आशा से अधिक खर्च होगा, नियमितता का ध्यान रखें, सुख सुविधायें रहेंगी. किसी से व्यर्थ का वाद विवाद न करें, श्रम अधिक होगा.

सिंह– राजकीय क्षेत्र में पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी, मांगलिक कार्यो में खर्च होगा, नवीन योजनाओं की शुरूआत होगी, पुरूषार्थ बना रहेगा, सुख सुविधायें रहेंगी.

कन्या– नौकरी सम्बन्धी कार्यो में सफलता मिलेगी, समय के स्वरूप को देखकर कार्य करें, पुरूषार्थ बना रहेगा, कामकाज बनने का योग है.

तुला– प्रयास करने पर सफलता मिलेगी, राजकीय कार्य बनेंगे, दूर दराज की यात्रा संभाव्य है, अनावश्यक व्यय को टालें. यश मिलेगा.

वृश्चिक– नए मित्र बनेंगे, स्त्री जाति की सलाह उपयोगी रहेगी, मानसिक स्थिरता रहेगी, जमीन जायजाद प्रापर्टी में सफलता मिलेगी.

धनु– परिश्रम के अनुरूप सफलता मिलने से खुशी होगी, रचनात्मक कार्यो में रूचि बढ़ेगी, पारिवारिक जीवन आशामय तरक्की वाला होगा, अतिथि सत्कार होगा.

मकर– प्रभावशाली लोगों के संपर्क का लाभ मिलेगा, व्यापार बढ़ेगा, कार्य में व्यस्तता रहेगी, जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा.

कुम्भ– आप जिसे घाटे का सौदा समझ रहे थे, उसमें अच्छा लाभ मिलेगा, परिश्रम अधिक होगा, मान सम्मान और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

मीन– कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफलता मिलेगी, पुराना कार्य करने से प्रसन्नता होगी, उच्च अध्ययन पर विचार होगा, विवाद को टालना हितकर रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2082 चैत्र शुक्ल त्रयोदशी गुरूवासरे रात 12/55, पूर्वाफल्गुनी नक्षत्रे दिन 12/54, वृद्धि योगे रात 7/24, कौलव करणे सू.उ. 5/45 सू.अ. 6/15, चन्द्रचार सिंह रात 7/24 से कन्या, पर्व– प्रदोष व्रत, शु.रा. 5, 7, 8, 11, 12, 3 अ.रा. 6, 9, 10, 1, 2, 4 शुभांक– 7, 9, 3.

व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को पूर्वाफल्गुनी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, सरसों, अलसी, सींगदाना, पिपरमेंट, में तेजी होगी, ज्वार, बाजरा, गर्म रहेगा. भाग्यांक 1893 है.

SUDOKU 7000

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 6999

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7